अध्याय

03

पथिक

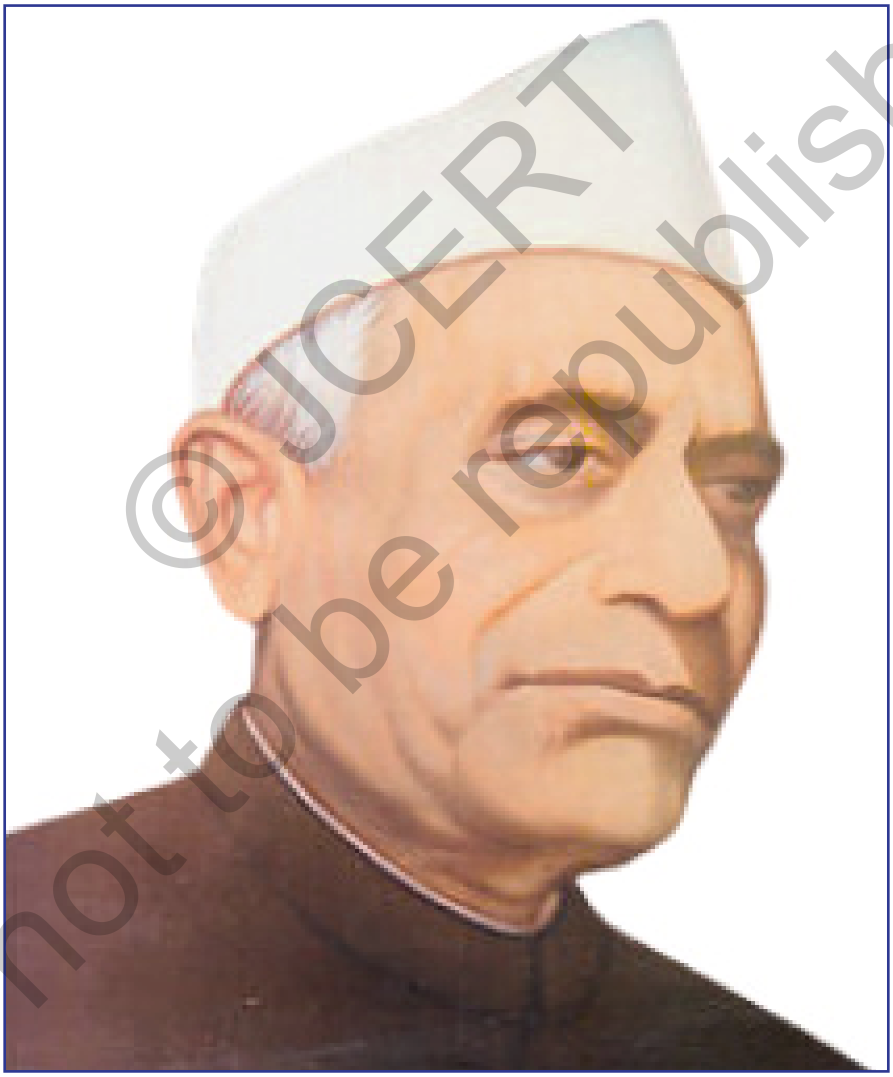

© JCERT not to be republished

रामनरेश त्रिपाठी

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

रामनरेश त्रिपाठी

कवि-परिचय

जन्म – सन् 1881 ईस्वी

जन्म-स्थान – कोइरीपुर, जिला जौनपुर (उत्तर प्रदेश)

मृत्यु – सन् 1962 ई. में

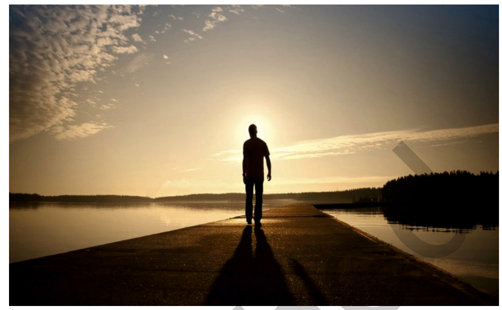

प्रमुख रचनाएँ:-

खंडकाव्य – मिलन, पथिक, स्वप्न

फुटकर कविता-संग्रह – मानसी

'कविता कौमुदी' (आठ खंडों) में नामक पुस्तक में हिंदी,उर्दू,बांग्ला और संस्कृत की लोकप्रिय कविताओं का संकलन हुआ है।

'ग्रामगीत' नामक कविता 'कविता कौमुदी' के ही एक खंड में संकलित है।

कविताओं के अलावा उन्होंने नाटक, उपन्यास, आलोचना, संस्मरण आदि गद्य की अन्य विधाओं मेंभी रचनाएँ की हैं।

संपादित पत्रिका – वानर (बाल पत्रिका)

रामनरेश त्रिपाठी आरंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद स्वाध्याय के बल पर हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला और उर्दू का ज्ञान प्राप्त किए।

रामनरेश त्रिपाठी छायावाद पूर्व की खड़ी बोली हिंदी के महत्वपूर्ण कवि माने जाते हैं।

रोमांटिक प्रेम को उन्होंने अपने कविता का विषय बनाया है। कविताओं में देश-प्रेम और वैयक्तिक-प्रेम दोनों मौजूद हैं, लेकिन देश-प्रेम की ओर उन्होंने विशेष ध्यान दिया।

© JCERT not to be republished

पाठ परिचय

- पथिक
- यह कविता 'पथिक' शीर्षक खंडकाव्य के पहले सर्ग से लिया गया है।
- इस कविता का प्रमुख नायक पथिक है, जो दुनिया के दुःखों से विरक्त होकर प्रकृति के सौंदर्य पर मुग्ध हो कर वहीं बसना चाहता है। वह किसी साधुजन द्वारा संदेश ग्रहण करके देश सेवा का व्रत लेता है।
- राजा द्वारा पथिक को मृत्यु दंड मिलता है, किंतु उसकी कीर्ति समाज में बनी रहती है।
- सागर किनारे खड़ा होकर पथिक प्रकृति की अद्भुत सौंदर्य को मधुर,मनोहर,उज्जवल प्रेम कहानी की तरह पाना चाहता है। प्रकृति के इस सौंदर्य पर वह मंत्रमुग्ध हो चुका है।
- प्रकृति के प्रति पथिक का यह प्रेम उसे अपनी पत्नी के प्रेम से दूर ले जाता है
- स्वच्छंदतावाद से प्रभावित इस कविता में प्रेम,भाषा और कल्पना का अद्भुत संयोग मिलता है।

© JCERT not to be republished

सप्रसंग व्याख्या:-

काव्यांश - 1

प्रतिक्षण नूतन वेश बनाकर रंग-बिरंग निराला।

रवि के सम्मुख थिरक रही है नभ में वारिद-माला।

नीचे नील समुद्र मनोहर ऊपर नील गगन है।

घन पर बैठ, बीच में बिचरूँ यही चाहता मन है।।

रत्नाकर गर्जन करता है, मलयानिल बहता है।

हरदम यह हौसला हृदय में प्रिये! भरा रहता है।

इस विशाल, विस्तृत, महिमामय रत्नाकर के घर के-

कोने-कोने में लहरों पर बैठ फिरूँ जी भर के।।

शब्दार्थः-

प्रतिक्षण = हर पल।

निराला = अद्भुत।

सम्मुख = सामने।

नूतन = नया।

वारिद माला = मेघों की माला।

रत्नाकर = सागर।

मनोहर = मन को हरने वाला।

मलयानिल = मलय पर्वत के चंदन वन से आने वाली शीतल और सुंगधित हवा।

विचरूँ = विचरण करना।

हौसला = हिम्मत, उत्साह।

प्रसंग:- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'आरोह' भाग -1 में संकलित रामनरेश त्रिपाठी की कविता 'पथिक' से अवतरित है। इस काव्यांश में कवि ने दु:खों से विरक्त काव्य नायक पथिक का वर्णन किया है जो प्रकृति के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर बार-बार उसी में विचरण करने की इच्छा प्रकट करता है।

व्याख्या:- कवि कहते हैं कि हर पल रंग-बिरंगा, अद्भुत, सुन्दर और नयीं वेशभूषा बनाकर आकाश में सूर्य के सामने मेघों की माला थिरक रही हैं। ऊपर आकाश का इतना सुन्दर दृश्य है, नीचे पृथ्वी पर नीला समुद्र मन को हरने वाला है और ऊपर भी नीला असीम सौन्दर्य सम्पन्न आकाश है। मेरा (पथिक का) मन चाहता है कि बादलों पर बैठ कर आकाश और धरती के बीच में ही विचरण करता रहूँ। मलय पर्वत की ओर से आने वाली सुगंधित हवा के चलने पर लहरों के उठने से समुद्र गर्जना करता है। कवि या पथिक अपने प्रेयसी को संबोधित करते हुए कहता है कि हे मेरी प्रियतमा ! मेरे मन में हर-क्षण यह उत्साह भरा रहता है कि मैं इस विशाल, दूर तक फैले हुए गहरे और गौरवशाली समुद्र रूपी घर के कोने-कोने में लहरों पर बैठकर जी भर के विचरण करता रहूँ।

विशेष:-

(क) इस काव्यांश में कवि नें आकाश और समुद्र में पल-पल परिवर्तित होने वाली असीम सुंदरता का चित्रण किया है।

(ख) 'रवि के सम्मुख थिरक रही है नभ में वारिद-माला' में मानवीकरण अलंकार, नीचे नील, बैठ बीच में बिचरूँ, हौसला हृदय और विशाल विस्तृत में अनुप्रास अलंकार तथा कोने-कोने में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(ग) कविता में तत्सम प्रधान खड़ी बोली हिंदी भाषा का प्रयोग हुआ है।

(घ) पंक्तियों के अंत में तुकांत होने से कविता में संगीतात्मकता है।

काव्यांश - 2

निकल रहा है जलनिधि-तल पर दिनकर-बिंब अधूरा।

कमला के कंचन-मंदिर का मानो कांत कँगूरा।

लाने को निज पुण्य-भूमि पर लक्ष्मी की असवारी।

© JCERT not to be republished

रत्नाकर ने निर्मित कर दी स्वर्ण-सड़क अति प्यारी।।

निर्भय, दृढ़, गंभीर भाव से गरज रहा सागर है।

लहरों पर लहरों का आना सुंदर, अति सुंदर है।

कहो यहाँ से बढ़कर सुख क्या पा सकता है प्राणी?

अनुभव करो हृदय से, हे अनुराग-भरी कल्याणी

शब्दार्थ:—

जलनिधि – समुद्र।

दिनकर – सूर्य।

कंचन — सोना।

कँगूरा – गुंबद, बुर्ज़।

असवारी – सवारी।

अनुराग – प्रेम।

प्रसंग:— प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग -1 में संकलित कवि रामनरेश त्रिपाठी की कविता 'पथिक' से लिया गया है। इसमें कवि ने समुद्र के सूर्य के प्रकाश में चमकते हुए अद्भुत सौन्दर्य का वर्णन किया है।

व्याख्या:— कवि कहते हैं कि सूर्योदय होने पर सूर्य का प्रतिबिम्ब समुद्र पर अद्भुत सौन्दर्य की बिखेर रहा है। ऐसा लगता है जैसे लक्ष्मी के सोने के मन्दिर का सोने का गुबंद हो। अर्थात् सूर्य का प्रतिबिम्ब समुद्र में लक्ष्मी का मन्दिर जैसा दिखाई दे रहा है जो सुनहरी किरणों में चमकता सोने का बना हुआ परिलक्षित हो रहा है। उसमें सूर्य का चित्र गुबंद के समान लग रहा है। ऐसा लगता है जैसे लक्ष्मी माता की सवारी को पृथ्वी पर लाने के लिए इस पवित्र भूमि पर समुद्र ने सोने की अत्यन्त प्यारी सड़क बना दी है। समुद्र अत्यन्त निडरता के साथ दृढ़ता एवम् गंभीरता पूर्ण होकर गर्जना कर रहा है। लहरों के बाद फिर से लहरों का उठना, और समाप्त होना यह क्रम अत्यत्न सुन्दर और मनमोहक है। कवि कहते हैं कि बताओं इस पृथ्वी के असीम सौन्दर्य का अवलोकन करने से बढ़कर क्या कोई अन्य सुख पाया जा सकता है ? कवि सभी मनुष्यों से प्रेम से भरकर इस अद्भुत, सुन्दर, मनमोहक, असीम सौन्दर्य का अपने हृदय से अनुभव करने को कह रहे हैं।

विशेष:-

(क) इस काव्यांश में समुद्र के तल पर पड़ने वाले सूर्य का अधूरा प्रतिबिंब और सूर्य के किरणों की सुंदरता का सुंदर चित्रण हुआ है।

(ख) 'कमला के कंचन-मंदिर का मानो कांत कँगूरा' में उत्प्रेक्षा अलंकार तथा कमला के कंचन, कांत कँगूरा एवं स्वर्ण-सड़क में अनुप्रास अलंकार है।

(ग) इन पंक्तियों में तत्सम शब्दावली से युक्त खड़ी बोली हिंदी भाषा के प्रयोग से कविता में क्लिष्टता आ गई है।

(घ) कविता की पंक्तियों में तुकांत होने के कारण गेय है।

© JCERT not to be republished

काव्यांश -3

जब गंभीर तम अर्द्ध-निशा में जग को ढक लेता है।

अंतरिक्ष की छत पर तारों को छिटका देता है।

सस्मित वदन जगत का स्वामी मृदु गति से आता है।

तट पर खड़ा गगन-गंगा के मधुर गीत गाता है।।

उससे ही विमुग्ध हो नभ में चंद्र विहँस देता है।

वृक्ष विविध पत्तों- पुष्पों से तन को सज लेता है।

पक्षी हर्ष सँभाल न सकते मुग्ध चहक उठते हैं।

फूल साँस लेकर सुख की सानंद महक उठते हैं-

शब्दार्थ:-

गंभीर तम = गहन अंधकार।

अंतरिक्ष = आकाश, धरती और आकाश के बीच की खुली जगह।

अर्द्ध निशा = आधी रात।

सस्मित = चमकता, सुन्दर।

सानंद = आनन्द से भरकर।

प्रसंग:- प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक आरोह भाग -1 में संकलित कवि रामनरेश त्रिपाठी की कविता 'पथिक' से उद्धृत है। इसमें कवि ने आधी रात के बाद होने वाला सूर्योदय का वर्णन बड़े ही सुन्दर ढंग से किया है।

व्याख्या:- कवि कहते हैं कि जब आधी रात को गहन अंधकार चारों ओर संसार में व्याप्त होता है तब आकाश में चारों ओर सुन्दर तारे सुशोभित होते हैं। उस समय चमकते हुए सुन्दर चेहरे वाला सूर्य संसार का स्वामी धीमी-धीमी चाल से आता हुआ आकाश रूपी गंगा के किनारे पर मीठे गीत गाता है। उसके आगमन पर चारों ओर का वातावरण मधुमय हो जाता है। सूर्योदय के सौन्दर्य से मोहित होकर आकाश में चंद्रमा भी हँसने लगता है। वृक्ष अपने विभिन्न पत्तों और फूलों से अपने शरीर को सजा लेते हैं। पक्षी अपनी खुशी को सम्भाल नहीं सकते, इसी कारण उनके चहचहाने का मीठा कलरव चारों ओर व्याप्त हो जाता है। फूल सुख की साँस भरके आनन्द पूर्वक अपनी सुगन्ध चारों ओर बिखेर देते हैं। सारा वातावरण अत्यन्त सुन्दर,आकर्षक और मनमोहक होता है। प्रकृति, पक्षी, वनस्पति सभी सूर्योदय के समय अपने खुशी को विभिन्न रूपों में जाहिर करते हैं।

विशेष:-

(क) इस काव्यांश में अर्ध रात्रि एवं सूर्योदय के समय प्रकृति की सुंदरता का मनोरम चित्रण हुआ है।

(ख) 'अंतरिक्ष की छत' एवं 'गगन-गंगा' में रूपक अलंकार, चंद्रमा का हँसना, वृक्ष का विविध पत्तों- पुष्पों से तन का सजाना, फूलों का साँस लेना आदि में मानवीकरण अलंकार तथा गगन- गंगा,गीत गाता, वृक्ष विविध,

© JCERT not to be republished

पत्तों- पुष्पों आदि में अनुप्रास अलंकार की छटा है।

(ग) तत्सम शब्दों से युक्त सरल सहज खड़ी बोली हिंदी भाषा का प्रयोग हुआ है।

(घ) पंक्तियों में तुकांत होने से कविता गेय है।

काव्यांश –4

वन, उपवन, गिरि, सानु, कुंज में मेघ बरस पड़ते हैं।

मेरा आत्म-प्रलय होता है, नयन नीर झड़ते हैं।

पढ़ो लहर, तट, तृण, तरु, गिरि, नभ, किरन, जलद पर प्यारी।

लिखी हुई यह मधुर कहानी विश्व-विमोहनहारी।।

कैसी मधुर मनोहर उज्ज्वल है यह प्रेम-कहानी।

जी में है अक्षर बन इसके बनूँ विश्व की बानी।

स्थिर, पवित्र,आनंद-प्रवाहित, सदा शांति सुखकर है।

अहा! प्रेम का राज्य परम सुंदर, अतिशय सुंदर है।।

शब्दार्थ:-

सानु = समतल भूमि।

आत्म-प्रलय = स्वयं को भूल जाना।

विश्व-विमोहनहारी = संसार को मुग्ध करने वाली।

जलद = बादल।

उज्ज्वल = पवित्र।

बानी = आवाज, ध्वनि।

अतिशय = अत्यधिक।

प्रसंग:- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी हिंदी की पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-1 में संकलित कवि रामनरेश त्रिपाठी की कविता 'पथिक' से अवतरित हैं। इसमें कवि ने प्रकृति के अवलोकन, और विचरण को अपना अतिशय सुन्दर अनुभव बताया है।

व्याख्या:- कवि कहते हैं जब वनों, बगीचों, पर्वतों, समतल मैदानों, और कुंजों में बादल वर्षा करते हैं तब मैं वर्षा के बरसने के अद्भुत और अति सुन्दर रूप को देखकर अपने आप को भूल जाता हूँ। उसके उस अद्भुत और मनोहारी सौन्दर्य के दर्शन करने में इतना तल्लीन हो जाता हूँ कि मेरी आँखों से प्रेम भरी आँसु की धारा प्रवाहित होने लगती है। कवि कहते हैं कि मेरी इस कविता द्वारा लहर, किनारे, धाम, वृक्ष, पर्वत, किरण, बादल के सौन्दर्य का वर्णन पढ़ो। मेरी यह 'पथिक' शीर्षक खंड काव्य में वर्णित प्रकृति वर्णन की कहानी संसार के मन को मोहने वाली है। प्रकृति के प्रेम की कहानी अत्यन्त मधुर, मनोहर और पवित्र है। मेरा मन करता है कि मैं शब्द बनकर इस संसार को वाणी दूँ। अर्थात् अभिव्यक्ति प्रदान करूँ। शांति जो स्थिर, पवित्र और आनन्द देने वाली हो वह सुख का आधार है। यह प्रकृति का सौन्दर्य अत्यन्त सुन्दर और अत्यन्त प्रभावशाली है।

© JCERT not to be republished

अभ्यास कविता के साथ

1. पथिक का मन कहाँ विचरना चाहता है?

उत्तर- पथिक का मन प्रकृति के सौन्दर्य का आनन्द लेते हुए विचरना चाहता है। जब आकाश में सूर्य के सामने रंग-विरंगा रूप बनाकर वर्षा की लड़िया थिरक रही हो, नीचे नीले समुद्र और ऊपर नीले आकाश के बीच बादल पर बैठकर ऐसे सुहावने प्राकृतिक सौन्दर्य में कवि पूरी पृथ्वी पर विचरण करना चाहता है। जब मलय पर्वत से आने वाली सुगंधित और शीतल हवा सागर में लहरें उत्पन्न कर समुद्र में गर्जना पैदा कर रही हो तब कवि का मन लहरों पर बैठकर समुद्र की यात्रा करना चाहता है।

2. सूर्योदय वर्णन के लिए किस तरह के बिंबों का प्रयोग हुआ है?

उत्तर- सूर्योदय के वर्णन के लिए सूर्य का धीमी गति से उदय होना, गगन रूपी गंगा के तट पर मधुर गीत का गाना, सूर्य के सौन्दर्य को देखकर चंद्रमा का हँसना, वृक्षों का विविध पत्तों और फूलों से सुसज्जित होना, पक्षियों का आनन्द पूर्वक चहचहाना तथा फूलों का आनन्द से महकना आदि बिम्बों का प्रयोग हुआ है।

3. आशय स्पष्ट करें -

(क) सस्मित-वदन जगत का स्वामी मृदु गति से आता है।

तट पर खड़ा गगन-गंगा के मधुर गीत गाता है।।

उत्तर- इन पंक्तियों में कवि नें सूर्योदय का अत्यंत ही चिताकर्षक और मनोहारी चित्रण किया है। सुंदर चमकते चेहरे वाला संसार का स्वामी सूर्य धीमी-धीमी चाल से आता है। ऐसा लगता है जैसे सूर्य गगन रूपी गंगा के किनारे खड़े होकर मधुर गीत गा रहा हो। यहाँ सूर्य के मानवीकरण द्वारा सूर्योदय का बड़ा ही मनोहारी और रोमांचकारी चित्रण हुआ है। कवि गगन को गंगा के रूप में चित्रण कर रूपक अलंकार तथा सूर्य को गीत गाते हुए दिखाकर मानवीकरण अलंकार का सुंदर प्रयोग किया है।

(ख) कैसी मधुर मनोहर उज्ज्वल है यह प्रेम-कहानी।

जी में है अक्षर बन इसके बनूँ विश्व की बानी।

उत्तर- सागर के किनारे पर खड़ा पथिक उसके सौन्दर्य पर मंत्रमुग्ध है। वह प्रकृति के इस अद्भुत, सुन्दर, मनमोहक सौन्दर्य को मधुर,मनोहर और उज्ज्वल प्रेम कहानी की तरह पाना चाहता है। कवि अन्त में कहता है कि मेरे मन में यह इच्छा है कि कविता के माध्यम से इस अपार, अलौकिक सौन्दर्य का वर्णन कर पूरे विश्व को इस सौन्दर्य से आत्मसात करवाऊँ।

4. कविता में कई स्थानों पर प्रकृति को मनुष्य के रूप में देखा गया है ऐसे उदाहरणों का भाव स्पष्ट करते हुए लिखें।

उत्तर- प्रस्तुत कविता में प्रकृति को मनुष्य के रूप में चित्रित कर कवि ने मानवीकरण

© JCERT not to be republished

अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है। ऐसे उदाहरण निम्नलिखित है -

(क) प्रतिक्षण नूतन वेश बनाकर रंग-बिरंग निराला।

रवि के सम्मुख थिरक रही है नभ में वारिद-माला।।

भावार्थ:- इन पंक्तियों में कवि ने आकाश में मेघमाला को हर क्षण नयी रंग-बिरंगी वेशभूषा धारण कर सूर्य के सम्मुख थिरकने का रोमांचकारी वर्णन किया है।

(ख) निर्भय, दृढ़, गंभीर भाव से गरज रहा सागर है।

लहरों पर लहरों का आना सुंदर, अति सुंदर हैं।।

भावार्थ:- सागर में सभी मानवीय गुण निडरता, दृढ़ता तथा गंभीरता का आरोपण किया गया है तथा उसे गरजते हुए प्रस्तुत किया गया है। सागर में एक के बाद एक लहर का आना अत्यन्त सुंदर हैं।

(ग) सस्मित-वदन जगत का स्वामी मृदु गति से आता है।

तट पर खड़ा गगन-गंगा के मधुर गीत गाता है।।

भावार्थ:- कवि ने यहाँ सूर्य को सुन्दर चेहरे वाला, संसार का मालिक तथा धीमी कोमल चाल से चलने वाला बता कर तथा आकाश रूपी गंगा के किनारे मुधर गीत गाते हुए दिखाकर पूर्ण मानव रूप दिखाया गया है।

(घ) उससे ही विमुग्ध हो नभ में चंद्र विहँस देता है।

वृक्ष विविध पत्तों- पुष्पों से तन को सज लेता है।

पक्षी हर्ष संभाल न सकते मुग्ध चहक उठते हैं।

फूल साँस लेकर सुख की सानंद महक उठते हैं-

भावार्थ- इन पंक्तियों में आकाश में चन्द्रमा का हँसना, वृक्षों का पत्तों-पुष्पों से अपने शरीर को सजाना, पक्षियों का सहर्ष चहकना तथा फूलों का सुख और आनन्द से महकना आदि प्रकृति पर सुन्दर मानवीय क्रियाओं का आरोपण हुआ है।

कविता के आस-पास

1. समुद्र को देखकर आपके मन में क्या भाव उठते हैं? लगभग 200 शब्दों में लिखें।

उत्तर- समुद्र को देखकर हमारा मन आनन्द से भर जाता है। समुद्र की विशालता, गहराई और तरलता हमें भी समुद्र जैसा ही विशाल, शक्तिपूर्ण, स्निग्ध बनने की प्रेरणा देती है। समुद्र में उठती, गिरती लहरें मेरे अंदर भी सदा कार्यरत रहने का भाव जगाती है। जिस प्रकार लहरें हमेशा समुद्र के किनारे को छूना चाहती है, उसी प्रकार हमें भी निरन्तर अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

© JCERT not to be republished

समुद्र पर सूर्य की किरणों को चमकता जल उसके सौन्दर्य को चार चाँद लगा देता है। रात्रि में चंद्रमा की रोशनी से चमकता जल नीलम की तरह अत्यन्त सुन्दर दिखाई देता है। समुद्र के चारों ओर झाग को देखकर ऐसा लगता है जैसे समुद्र पर नीले रंग की चादर बिछी हो जिसके चारों ओर झालर लटक रही हो। समुद्र सुन्दर, अत्यन्त विशाल,सीमाहीन, आकाश को छूता हुआ अद्भुत सौन्दर्य की अनुभूति करता है। अपने अन्दर रत्नों को समाये हुए अपने गाम्भीर्य रूप को प्रस्तुत करता है। इसी प्रकार मनुष्य को भी प्रभुत्ता, ऐश्वर्य तथा धन-सम्पन्न होने पर भी अपनी गम्भीरता को नहीं खोना चाहिए। उसकी गर्जना उसके क्रोध को व्यक्त करती है, जो विनाश का कारण है। अतः मनुष्य को भी जीवन में कभी भी क्रोध नहीं करना चाहिए। वास्तव में समुद्र के अद्भुत रूप के

साक्षातकार से मनुष्य को जीवन - यापन के सही दिशा निर्देश के दृष्टान्त प्राप्त होते हैं। वास्तव में समुद्र रत्नाकर ही है।

2. 'प्रेम सत्य है, सुंदर है' - प्रेम के विभिन्न रूपों को ध्यान में रखते हुए इस विषय पर परिचर्चा करें।

उत्तर- 'प्रेम सत्य है, सुंदर है'- यह कथन सत्य है। प्रेम चाहे ईश्वरीय हो, मानवीय हो या प्राकृतिक हो हर रूप में सत्य और सुंदर होता है। प्रेम मन में सच्चाई और सुंदर गुणों की सृष्टि करता है। प्रेम करने वाला व्यक्ति अंतरात्मा से दूसरे व्यक्ति को चाहता है। वह प्रेम के बदले में कुछ पाने की इच्छा नहीं रखता। हमेशा त्याग की भावना उसके मन में बलवती रहती है। प्रेमी सदा अपने प्रेमी के लिए सर्वस्व अर्पण की भावना रखता है। प्रेम के विविध रूप हैं - मातृभूमि से प्रेम, मां-बाप से प्रेम, भाई-बहन का प्रेम, मित्र-मित्र का प्रेम, प्रकृति का प्रेम, पति-पत्नी का प्रेम, ईश्वर का प्रेम आदि। प्रेम प्रत्येक रूप में आनन्द की सृष्टि करता है। प्रेम करने वाला हमेशा अपने प्रेमी से प्रेम कर स्वयं की सत्ता को भी भूल जाता है। उसी में ही अपने रूप को देखने लगता है।

इसीलिए अपने प्रेमी के दुःख से दुःखी तथा सुख से खुश होने लगता है। वास्तव में प्रेम हर रूप में दीवाना बना देने वाला होता है।

3. 'वर्तमान समय में हम प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं'- इस पर चर्चा करें और लिखें कि प्रकृति से जुड़े रहने के लिए क्या कर सकते हैं ?

उत्तर- वर्तमान समय में हम निरन्तर प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं क्योंकि मनुष्य आज भौतिकवादी बन चुका है।

भौतिक सुख - सुविधाओं को पाने की चाह में मनुष्य प्रकृति से कटती चली जा रही हैं। दिन-रात की भाग-दौड़ उसे इतना थका देती है कि वह प्रकृति से प्रेम करने की बात तो दूर उसके बीच जाने से भी कतराता है। मनुष्य प्रकृति से तभी जुड़ा रह सकता है जब वह वन, पर्वत, नदी वनस्पति के महत्त्व को समझे। उसकी उपयोगिता का अहसास करे तथा यह जाने कि प्रकृति के बिना मनुष्य का अस्तित्व ही सम्भव नहीं है। मनुष्य का जीवन इसी प्रकृति पर पूर्ण रूप से आधारित है। प्रकृति ही उसके पालन-पोषण का दायित्व निभाती है। सूर्य, चंद्रमा आकाश, पृथ्वी, जल, अग्नि यह

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

© JCERT not to be republished

सभी उसके जीवन के लिए एक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अतः मनुष्य को इसके महत्त्व को समझना होगा तथा इसके सौन्दर्य की रक्षा करनी होगी। जब इनका सौन्दर्य बना रहेगा तभी मनुष्य का जीवन सुन्दर और सुखमय बन सकता है।

4. सागर संबंधी दस कविताओं का संकलन करें और पोस्टर बनाएँ।

उत्तर- विद्यार्थी स्वयं करें।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-उत्तर

1. सूर्य के सम्मुख आकाश में कौन नृत्य कर रही है?

(क) रत्नमाला

(ख) सुंदर माला

(ग) वारिद - माला

(घ) कामिनी - माला

उत्तर (ग) वारिद - माला

2. कवि किस के घर के कोने-कोने में जी भर कर फिरना चाहता है?

(क) बादल के

(ख) समुद्र के

(ग) सम्राट के

(घ) प्रिय के

उत्तर (ख) समुद्र के

3. कवि ने जगत का स्वामी किसे कहा है?

(क) सूर्य को

(ख) चंद्रमा को

(ग) वायु को

(घ) जल को

उत्तर (क) सूर्य को

4. कवि ने प्रेम के राज्य को अतिश्य क्या कहा है ?

(क) दुःखद

(ख) मधुर

(ग) सुंदर

(घ) उज्ज्वल

उत्तर (ग) सुंदर

5. 'विश्व - विमोहनहारी' शब्द का क्या अर्थ है?

(क) संसार को मुग्ध करने वाली

(ख) संसार को ठगने वाली

(ग) दोनों

(घ) कोई नहीं

उत्तर (क) संसार को मुग्ध करने वाली

6. 'रत्नाकर' क्या करता है?

(क) वर्षा लता है

© JCERT not to be republished

(ख) गर्जन लाता

(ग) आँधी लाता है

(घ) प्रकाश फैलता है

उत्तर (ख) गर्जन लाता है

7. 'निकल रहा है जलनिधि-तल पर ' में जलनिधि का क्या अर्थ है?

(क) कमल

(ख) समुद्र

(ग) बादल

(घ) वर्षा

उत्तर (ख) समुद्र

8. लक्ष्मी की सवारी लाने के लिए समुद्र ने कैसी सड़क बनाई है?

(क) चाँदी की

(ख) सोने की

(ग) लोहे की

(घ) पत्थर की

उत्तर (ख) सोने की

9. कैसी मधुर-मनोहर उज्जवल है यह प्रेम कहानी' कवि किस की प्रेम कहानी को मधुर, मनोहर उज्जवल बता रहा है?

(क) मानव की

(ख) प्रकृति की

(ग) पशु-पक्षी की

(घ) ईश्वर की

उत्तर (ख) प्रकृति की

10. कवि को किस चीज़ का संग्रह करने की विशेष रूचि थी?

(क) धन का

(ख) पुस्तकों का

(ग) लोकगीतों का

(घ) कविताओं

उत्तर (ग) लोकगीतों का

11. कवि का स्वभाव कैसा है?

(क) चंचल

(ख) मित्रतापूर्ण

(ग) सरल

(घ) भ्रमणशील

उत्तर (घ) भ्रमणशील

12. 'घन' शब्द का क्या अर्थ है ? (क) सूर्य

(क) जंगल

(ख) समुद्र

(ग) बादल

(घ) पानी

उत्तर (घ) बादल

13. कवि का मन किस पर बैठकर धरती और आकाश के बीच विचरण करना चाहता है ?

© JCERT not to be republished

(क) हवाई जहाज पर

(ख) हवा पर

(ग) बादलों पर

(घ) घोड़े पर

उत्तर (ग) बादलों पर

14. मलय पर्वत से आने वाली पवनें कैसी हैं?

(क) गर्म

(ख) तेज

(ग) शीतल और सुगन्धित

(घ) धीमी

उत्तर (ग) शीतल और सुगन्धित

15. तारे आसमान में बिखर कर क्या करते हैं?

(क) रास्ता दिखाते हैं

(ख) चमकते हैं

(ग) चलते हैं

(घ) अद्भुत दृश्य बनाते हैं

उत्तर (घ) अद्भुत दृश्य बनाते हैं

16. कवि की आँखों से कब अश्रुधारा प्रवाहित होने लगती है?

(क) भाव विह्वल होने पर

(ख) दुखी होने पर

(ग) निराश होने पर

(घ) आँखें खोलने पर

उत्तर (क) भाव विह्वल होने पर

17. सूर्य की अधूरी परछाई कवि को कैसी प्रतीत होती है?

(क) रथ की तरह

(ख) घोड़ों की तरह

(ग) लक्ष्मी के मंदिर की तरह

(घ) इनमें से कोई नही

उत्तर (ग) लक्ष्मी के मंदिर की तरह

© JCERT not to be republished